मानव जीवन सुन्दर कैसे ?

Shri Ram Kumar 'Sewak' chief editor (H)

पीछे निरंकारी बाबा जी के एक प्रवचन में सुना-युग सुंदर,सदियाँ सुंदर,हर पल सुंदर-गर मानव जीवन हो सुंदर |सहज ही प्रश्न उभरा कि मानव जीवन सुंदर बनाने का उपाय क्या है ?

बचपन में जब अलंकारो के बारे में पढ़ा था तो उसमें अलंकार की परिभाषा बताते हुए कहा गया था कि -जिस प्रकार कोई स्त्री आभूषण पहनकर ज्यादा सुंदर लगने लगती है इसी प्रकार अलंकार किसी भी कविता की सुंदरता बढ़ाते हैं |स्पष्ट हो गया कि अलंकार धारण करने से जीवन में सुंदरता आ जायेगी |सवाल उभरा कि क्या इतना कर लेना काफी है ?विभिन्न अलंकरण धारण करके क्या युगो को सुंदर बनाया जा सकता है ?

२५-२६ साल पुरानी बात है -मेरा विवाह हुए कुछ ही समय हुआ था |एक दिन पत्नी ने आभूषण बनवाने को कहा |संयोग की बात थी कि उस समय वैसा कर पाना सम्भव नहीं था |पत्नी को किसी प्रकार समझाने की कोशिश की लेकिन स्त्रियो को इस मामले में समझाना काफी कठिन होता है -बहरहाल साम-दाम -दंड-भेद आदि हर नीति का प्रयोग करके मामला सुलझाया |

वह रविवार का दिन था और हमारे नगर में साप्ताहिक सत्संग शाम को होता था |संयोगवश उस दिन पवचन की सेवा मेरे हिस्से में आयी |मंच संचालक महात्मा ने जो शब्द निकाला उसमें बाबा अवतार सिंह जी महाराज ने कहा था कि -

सबर-शान्ति ते समदृष्टि संतजना दा गहना ए-संतजना दा वड्डा जेवर भाने अंदर रहना ए|

शब्द सुनकर मुझे लगा कि बाबा जी ने मेरा काम बहुत आसान कर दिया है |दास शुरू हो गया कि असली आभूषण हैं-सद्गुण | सद्गुण यानि कि सब्र-यानि कि - PATIENCE |

देखा तो यह जा रहा कि आज PATIENTS यानि कि रोगी तो हर कहीं नज़र आते हैं लेकिन धैर्यवानों का बेहद अभाव है |इसी का परिणाम है कि हर कोई हर किसी को OVERTAKE करने यानि कि धक्का देकर आगे

निकलने में लगा है |मानव में मानवीय गुणो का नितांत अभाव नज़र आता है जिस कारण दुनिया नरक का रूप ले रही है |जब धैर्य ही नहीं है तो फिर शांति कहाँ से आयेगी |यही कारण है कि घर-घर में तनाव है क्यूंकि बुनियाद ही खुदगर्ज़ी के आधार पर बनाई हुई है |

समदृष्टि तो बहुत ही ऊंची अवस्था है |यह तो संत-महात्माओ में भी आसानी से नहीं आती |द्रोणाचार्य अर्जुन और एकलव्य को समदृष्टि से कहाँ देख पाये |लोग अपने बच्चो को किसी और दृष्टि से देखते हैं और दुसरे के बच्चो को किसी और दृष्टि से -इसीलिए बच्चो के प्रति अपराध करते हुए उन्हें संकोच नहीं होता |वास्तव में समदृष्टि सिर्फ पूर्ण ब्रह्मज्ञानी महात्मा की ही हो सकती है इसलिए इसे अर्जित करना पड़ता है |

आगे बाबा जी ने परमात्मा के भाने यानि कि प्रभु की रज़ा को सहज स्वीकार करने की बात कही |यह कर पाना भी कठिन है लेकिन होगा तो वही जो परमात्मा चाहेगा इसलिए भाने को तो मानना ही होगा इसलिए बेहतर है कि राज़ी-खुशी यानि कि सहजता से मान लें |

मुझे लगा कि जो गुण बाबा जी ने ऊपर बताये हैं वही जीवन को सुंदर बनाने वाले हैं |सिर्फ निरंकारी अनुयाईयों का ही नहीं बल्कि हर मानव का जीवन इन गुणो को धारण करने से सुंदर बन सकता है |मानव जीवन सुंदर होगा तो हर पल सुंदर होगा -वैसे भी सदियो या युगो तक कौन जी पाता है |सदियो तक रहता है उनका नाम -जो असाधारण जीवन जीते हैं यानि कि सब्र-शांति-समदृष्टि -सहजता आदि को जीवन में अपना लेते हैं |

Keep visiting

www.MAANAVTA.com a spiritual website

Do tell your near and dear ones about website.